© 2019 IJSRST | Volume 6 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Education

# उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियो के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

**डॉ० गिरीश कुमार वत्स**
प्राचार्य, ऐ० टी० एम० एस० कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, अछेजा, हापुड़, उत्तर प्रदेश।

**शोध सारांश** – किसी भी शब्द के चतुर्दिक विकाल हेतु आवश्यक वैज्ञानिक, सामाजिक एवं मानवीय क्षमता प्रदान करने वाले विद्यार्थी राष्ट्र की अमूल्य घरोहर है। अतः विद्यार्थियो का समुचित विकाल प्रत्येक राष्ट्र के लिए अपरिहार्य है। सम्यक विकास समन्वित व्यवहार तथा प्रभावी अधिगम हेतु विद्यार्थियो का समग्र रूप से स्वरूप होना अत्यन्त आवश्यक है। जिससे वे राष्ट्र को उन्नति में सहयोग करते हुए शक्ति सम्पन्न समर्थ, दक्ष और सार्थक नागरिक सिद्ध हो सके। मानसिक स्वास्थ्य का अभाव विभिन्न समस्याओ का जनक है। संसार के सभी मनुष्य मुखमय एवं शान्ति पूर्ण जीवन जीने की कामना करते है। सनतुष्ट तथा सुखमय जीवन का आधार सुस्वास्थ्य है। जो व्यक्ति को अर्थपूर्ण एवं सक्रिय जीवन जीने हेतु प्रेरित करता है। स्वास्थ्य मानव का परमावश्यक गुण है। जिसे उस मिटटी के समान स्वीकार किया गया है। जिससे सर्वोत्तम सुमन पुष्पित होते है।

**प्रस्तावना–** तन्दुरूस्ती हजार नियामत है। यह शक्ति भी शारीरिक पक्ष की महत्ता स्थापित करती है। इसके साथ ही साथ यह भी उल्लेख किया गया है कि मन के स्वास्थ होने पर ही शरीर की स्वस्थता सम्भव है। इस प्रकार मानसिक स्वास्थ्य का विशेष महत्व है। मानसिक स्वास्थ्य सम्प्रत्यय के स्वरूप के सम्बन्ध में विभिन्न मनोवैज्ञानिको, मनोचिकित्सको एव विद्वानो ने भिन्न – भिन्न विचार प्रस्तुत किया है :–

कट्स और मीस्ले (1941) ने लिखा है कि मानसिक स्वास्थ्य वह योग्यता है। जिससे हम जीवन की कठिन परिस्थितियों से अपना सामंजस्य स्थापित करते है और मानसिक आरोग्य वह साधन है। जो इस सामंजस्य को सम्भव बनाता है।

**मानसिक स्वास्थ्य :–** मनोविज्ञान की जड़े दर्शनशास्त्र में है। किन्तु पाश्चात्य मनोवैज्ञानिको ने आत्मा और मन को संज्ञात्मक प्रक्रियाओं के द्वारा अपदस्य कर दिया है। भारतीय दर्शन और मनोविज्ञान अभी भी आत्मा चेतना और मन को मानव व्यवहार का महत्वपूर्ण आधार समझता और मानता है।

शरीर, मन और आत्मा तीनों ही एक दूसरे से घनिष्ट रूप से सम्बन्धित है। यही कारण है कि भारतीय मनोविज्ञान में एक और तो ''शरीर माध्यम कुल धर्म साधन कहा जाता है।'' तो दूसरी और सब कुछ आत्मा के आश्रित रूप में प्रतिपादित किया गया है।

आत्म–दर्शन हेतु इसे प्रेरित किया जाता है। अतः मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को परस्पर आश्रित समझा गया है।

मानसिक स्वास्थ्य इस बात पर भी निर्भर करता है कि हमारे विचार सकारत्मक है या नकारात्मक यदि मानव मन नकारात्मक संवेगो जैसे – क्रोध, हरजा,ईर्ष्या, भय आदि से नियंत्रित है। तो इनका प्रभाव मनुष्य के मनुष्य के मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य दोनो पर प्रभाव पड़ेगा।

**अध्ययन का औचित्य :–** मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का परस्पर गहन सम्बन्ध है क्योकि मानसिक स्वास्थ्य विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। मानसिक स्वास्थ्य

के द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि किस तरह प्रभावित होती है। यह जानना ही इस लघु शोध का विषय है। मानसिक स्वास्थ्य किसी न किसी रूप में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। तो विद्यार्थियो के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हेतु उपयुक्त सुझाव दिये जा सकते है। यह जानने हेतु ही इस लघु शोध अध्ययन की अनुसन्धान कार्य ने अपने शोध के लिए इस समस्या का चयन किया है।

**समस्या में प्रयुक्त प्रत्ययो की व्याख्या**

**मानसिक स्वास्थ्य :–** मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा अपनी भावनाओं, इच्छाओं, महत्वकाक्षाओं और आदर्शो को वास्तविक धरातल तक सीमित रखने और अपने आपको अपने पर्यावरण के अनुसार ढ़ालने और उसके साथ समायोजन करने अथवा अपने पर्यावरण को अपने अनुकूल ढ़ालने और उसके समायोजन करने की योग्यता है।

**शैक्षिक उपलब्धि :–** शैक्षिक उपलब्धि से हमारा तात्पर्य है। शिक्षण उददेश्य की प्राप्ति हेतु विद्यार्थियो ने शिक्षा से सम्बन्धित शैक्षिक उददेश्यो को किस सीमा तक प्राप्त कर लिया है। यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि को बताता है। प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियो के कक्षा 10 के प्राप्तांको को लिया गया है।

**उच्च माध्यमिक स्तर–** उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य प्राथमि एवं उच्च स्तर (शिखा के मध्य स्थित होने से है। इसके अन्तर्गत 9वीं कक्षा से 12वीं कक्षा के विद्यार्थी समाविष्ट होते है। प्रस्तुत अध्ययन में 11वीं कक्षा के विद्यार्थियो को सम्मिलित किया गया है।

**शोध अध्ययन के उददे**श्य

- उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियो के मानसिक स्वास्थ्य और इसके 6 क्षेत्रो का तुलात्मक अध्ययन
- उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना

शो**ध परिकल्पनाये**

- उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य प्राप्तंको में सार्थक अन्तर नही है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांको में सार्थक अन्तर नही है।

**अध्ययन का परिसीमांकन :–** प्रस्तुत लघु शोध कार्य की निम्न परिसीमाएँ है :–

प्रस्तुत लघु शोध कार्य में केवल मोदीनगर में स्थित उच्चमाध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 11वीं कक्षा के 100 विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।

**अध्ययन में प्रयुक्त विधि** – प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

**जनसंख्या –**प्रस्तुत शोध अध्ययन में गाजियाबाद जिले के मोदीनगर तहसील के बालक एवं बालिकाओं के दो विद्यालय का चयन किया गया है।

**न्यादर्श** :– प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने प्रदतों का संकलन करने के लिए मोदीनगर के बालक एवं बालिकाओं के दो विद्यालय का चयन किया गया है। न्यादर्श में एक विद्यालय से 50 बालक तथा दूसरे विद्यालय से 50 बालिकाओं का चयन किया गया है।

**शोध के उपकरण :–**प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्न परीक्षण पत्र का प्रयोग किया जायेगा मानसिक स्वास्थ्य मापनी (अरूण कुमार सिंह पटना) (अल्पणा सैन गुप्ता, पटना) इन उपकरण का प्रयोग मानसिक स्वास्थ्य मापन के लिए किया गया है।

आंकडा का प्रस्तुतीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या

HOI :– उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य प्राप्तांको में सार्थक अन्तर नही है।

| चर | वर्ग | संख्या | माध्य | मनक विचलन | डी एफ | टी मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मनसिक स्वास्थ्य | बालक | 50 | 90.58 | 5.5 | 98 | 4.62 | सार्थक अन्तर है। |
| | बालिकाएँ | 50 | 95.52 | 5.2 | | | |

**विवेचना :–**सारणी 4.1 का अवलोकन करने से विदित है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य के माध्य प्राप्तांक क्रमशः 90.58 व 95.52 है तथा मानक विचलन क्रमशः 5.55 व 5.24 है एवं टी मूल्य 4.62 है। जोकि विश्वास के स्तर 0.01 पर सार्थक है। जबकि डी एफ 98 है। इसका तात्पर्य है कि मानसिक स्वास्थ्य मध्य है। सार्थक अन्तर है।

अतः शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य प्राप्तांको में सार्थक अन्तर नहीं है। निरस्त की जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य प्राप्ताकों में सामानता का अभाव है।

HO :– उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांको में सार्थक अन्तर नहीं है।

| चर | वर्ग | संख्या | माध्य | मनक विचलन | डी एफ | टी मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शैक्षिक उपलब्धि | बालक | 50 | 59.41 | 6.97 | 98 | 6.6 | सार्थक अन्तर है। |
| | बालिका | 50 | 69.40 | 8.13 | | | |

**विवेचना :–** सारणी 4.2 का अवलोकन करने से विदित है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि के दृष्टिकोण माध्यम प्राप्तांक क्रमशः 59.4 व 69.4 है तथा मानक विचलन क्रमशः 6.97 व 8.13 है। जोकि मूल्य 6.6 है। जोकि विश्वास के स्तर 0.01 पर सार्थक है। एव डी एफ 98 है। इसका तात्पर्य है कि बालक एवं बालिकाओ की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यों में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तकों में सार्थक अन्तर नही है। निरस्त की जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्ताकों में समान्यता का आभाव है।

**अध्ययन के परिणाम–** प्रस्तुत शोध की प्रक्रिया के दौरान प्रदत्तों के संकलन प्रदतों के विश्लेषण तथा परिकल्पनाओं के सत्यापन एवं परिणामों की व्याख्या के पश्चात् शोधकर्ता निम्नलिखित निष्कर्षो पर पहुचा है।

1 उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य प्राप्ताकों में समानता का आभाव है।

2 उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्ताकों में समानता का अभाव है।

निष्कर्ष :–

बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य के आयामों जैसे – अपना सकारात्मक विकाल, वास्तविकता का ज्ञान, व्यक्तित्व समाकलन, स्वायत्त शालन समूह वाचक अभिवृत्ति और वातावरण का पूर्ण ज्ञान के मध्य सार्थक अन्तर नही है क्योकि आज समाज में मानसिक स्वास्थ्य का अर्घ वास्तविकता के धरातल पर वातावरण से पर्याप्त सामंजस्य करने की योग्यता ही नही है बल्कि दैनिक जीवन में भावनाओं, इच्छाओं, आदर्शो और महत्वकाक्षाओं में संतुलन रखने की योग्यता से है। जिसका तात्पर्य अपने जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने और उनको स्वीकार करने की योग्यता से होता है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


- मंगल, डा0 एस0के0 (1991) शुभ्रा प्रारम्भिक स्तर पर शारीरिक एवक स्वास्थ्य शिक्षा, आर्या बुक डिपो, 30 करोल बाग, नई दिल्ली।
- पाण्डेय कल्पलता (2016) श्री वास्तव एस0एस0 शिक्षा मनोविज्ञान
- भटनागर ए0बी0 शैक्षिक मनोविज्ञान, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस मेरठ।
- लाल, रमन बिहारी, जोशी शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारम्भिक सख्यिकी अधिगमकर्ता का विकाल एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ।
- श्री वास्तव, डा0 ए0के0 (2016) शारीरिक शिक्षा एवं मानसिक शिक्षा, दिल्ली इंजीनियरिंग कॉलेज, बवाना रोड, दिल्ली प्रेरणा प्रकाशन, प्रथम संस्कृत
- डा0 एम0के0 (2017) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा 2 तृतीय संस्कृरण
- धानी योगराज (2018) शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा प्ररेणा प्रकाशन दिल्ली
- आधाना विपिन व स्वेता मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्याकंन सेंट जोजफ कालेज आगरा।
- शर्मा डा0 बी0एल0 सक्सैना डा0 आर0एन0 यू0जी0सी0 नेट शिक्षा शास्त्र आर लाल बुक डिपो मेरठ